Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2018-2020 R.N.I. No. 72014/99 Posted at New Delhi PSO Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

अज्ञानी

जूं अधर्म रा कामा धर्म माहे घाल्या,
धर्म रा कामा अधर्म में घाल्या।
दोनूंई विध कर्म बांधे अग्यांनी,
दुरगत माहे वाल्या।।

अज्ञानी लोग अधर्म के कार्य को धर्म में और धर्म के कार्य को अधर्म में डाल देते हैं। वे दोनों ओर से बंध जाते हैं, उनकी दुर्गति होती है।

● नई दिल्ली ● वर्ष 21 ● अंक 46 ● 24 - 30 अगस्त, 2020 ● प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 22-08-2020 ● पेज : 9 ● ₹ 10

पौषध है पाप मिटाने की औषध

मन की गाँठों को खोलने का महापर्व है संवत्सरी : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, २२ अगस्त, २०२०

जैन श्वेतांबर धर्मसंघ का महान पर्व संवत्सरी। सामाजिक पर्वों में तो खाना-पीना, मौज-मस्ती होती है, पर यह पर्व तो अलौकिक है। इसमें तो आहार का त्याग होता है। स्वयं से स्वयं को देखने का अवसर है। वर्ष भर में हुई भूलों को देखकर उनका प्रायश्चित करना है। किसी से मन-मुटाव हो गया, बोलचाल बंद हो गई उसे भूलाकर खमतखामणा करने का पर्व है। सरल बनने का पर्व है। ऐसा पर्व सिर्फ जैन धर्म में ही मनाए जाने वाला महापर्व है। इसी कारण इसे पर्वाधिराज महापर्व कहा गया है। जैसे णमोकार मंत्र को महामंत्र कहा गया है, वैसे ही इसे महापर्व कहा गया है। आठ दिनों का यह पर्व आज समापन की ओर है। कल क्षमापना दिवस है। तेरापंथ धर्मसंघ के महानायक आचार्यश्री महाश्रमण जी संवत्सरी एकता के लिए आगे कदम बढ़ाया है, जिसकी पूरे जैन श्वेतांबर धर्मसंघ में भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है।

संवत्सरी के पावन पर्व पर जैन जगत के उज्ज्वल नक्षत्र, तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, जिनशासन प्रभावक, तीर्थंकर तुल्य, अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणी जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की।

आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में फरमाते हुए कहा कि दुनिया में अन्न दान, जल दान, शिक्षा दान, औषध दान आदि अनेक प्रकार के दान हो सकते हैं। शास्त्रकार ने सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ बड़ा दान अभय दान प्राणियों को बताया है। अभय दान वही दे सकता है, जो महाव्रत या व्रत स्वीकार कर लेता है। छः काय के जीव निकायों की हिंसा का परित्याग कर देना। अहिंसा पालने वाला अभयदाता है। अहिंसा महाव्रत साधु का धर्म है। गृहस्थों के आंशिक रूप में अहिंसा का पालन होता है। अपने जीवन में खानपान का ध्यान दें। खान-पान में निरपराध प्राणियों की हत्या तो नहीं हो रही है। होटल हो या होस्टल, देश हो या विदेश जैन समाज के लोग ध्यान रखें कि वहाँ मांसाहार तो नहीं है। जैन हो अजैन बने गुड मैन। बच्चों में शाकाहार के संस्कार आएँ। यह एक दृष्टांत से समझाया। संस्कारक ध्यान दें। खान-पान की विशुद्धि रहे।

गृहस्थ नशे से मुक्त रहे। परिवार में, व्यक्तिगत जीवन में नशे को स्थान न मिले। गृहस्थ हिंसा से जुड़े हैं, पर उसका अल्पीकरण हो। रात्रि भोजन का भी त्याग रखने का प्रयास करें। यह संयम की साधना है। शास्त्रकार ने आगे कहा है कि अनवद्य सत्य न बोलें। सावद्य सत्य से बचें यह एक दृष्टांत से समझाया। तप में ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ है और दुनिया के लोगों में भगवान महावीर लोकोत्तम है। संवत्सरी जैन धर्म श्वेतांबर का आध्यात्मिक पर्व है। खाने-पीने का नहीं, भूखा रहने का पर्व है। आत्मा की पोथी पढ़ने का क्षमा का पर्व है। आज का प्रतिक्रमण सबसे बड़ा होता है। आज की विशेष बात है, क्षमा। कुछ कटु बोल दिया, कह दिया या कटु व्यवहार हो गया हो तो सबसे खमतखामणा। मन से खमतखामणा हो। मन की गाँठें खोलने का महापर्व है। यह क्षमा-मैत्री का पर्व है। शरीर का ध्यान रखते हैं, आत्मा का भी ध्यान रखें। **पौषध पाप मिटाने की औषध है।** सामायिक के नियमों की जानकारी दी।

संवत्सरी पर्व धार्मिक पर्वों में महत्त्वपूर्ण है। गीत में कहा गया है–आयो जैन जगत को प्रमुख पर्व संवत्सरी रे। बच्चे नमस्कार महामंत्र का धारण करें। दक्षिण यात्रा में देखा वहाँ काफी संख्या में दिगंबर जैन हैं, वे निरंतर नमस्कार महामंत्र का जाप करते थे। आगम भी प्रेरणा देने वाले हैं। स्वाध्याय होता रहे। जैन वाङ्मय का काम हुआ भी है और हो भी रहा है। हमारा ज्ञान बढ़े। ज्ञान का सार है, आचार। जैन शासन में जैन विद्या का विशाल भंडार है। हम श्रुत आराधना में आगे बढ़ें।

(शेष पृष्ठ २ पर)

भीतर में भी प्रभु का नाम जपो : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, २० अगस्त, २०२०

पर्वाधिराज पर्युषण का छठा दिन–जप दिवस। साधना के श्लाका पुरुष, वात्सल्यमूर्ति आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का विवेचन करते हुए फरमाया कि चयनित निर्धारित २७ भवों के अंतर्गत २६वें भव में दशम देवलोक में रहें। वहाँ का आयुष्य पूर्ण कर मनुष्य गति में आ रहे हैं। २७वाँ भव प्रारंभ हो रहा है। श्रवण भगवान के जीवन के संदर्भ में बताया है कि भगवान के पाँच कार्य हस्तोतर नक्षत्र यानी उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के योग में हुए हैं। हस्त नक्षत्र उतरा फाल्गुनी नक्षत्र के बाद आता है, इसलिए भगवान को पाँच हस्तोतर का विश्लेषण कहा गया है। पाँच घटनाएँ हैं–देवलोक से गर्भ में च्यवन, गर्भ हस्तांतरण, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान ये पाँचों हस्तोतर नक्षत्र में हुए हैं। जीवन का समापन, मोक्ष की प्राप्ति उन्हें स्थाती नक्षत्र में हुई थी।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सभी सुधि पाठकों एवं समाचार प्रेषकों से बारंबार खमतखामणा

-- श्रद्धाप्रणत --

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

✦ परानुशासन की तब तक उपयोगिता है, जब तक व्यक्ति का आत्मानुशासन नहीं जागता।
–आचार्यश्री महाश्रमण

मानव को वाणी का सदैव संयम रखना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, १८ अगस्त, २०२०

पर्युषण पर्व का चौथा दिन वाणी संयम दिवस और भगवान महावीर की आध्यात्मिक यात्रा का विवेचन। भगवान महावीर के प्रतिनिधि तेरापंथ के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा को आगे बढ़ाते हुए फरमाया कि भगवान महावीर की आत्मा के मुख्यतया २७ भव बताए गए हैं। अट्ठारहवें भव में वासुदेव के रूप में प्रकट हुए हैं। त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव का विस्तृत वर्णन किया।

वासुदेव आयुष्य पूर्ण कर १९वें भव में सातवीं नरक में उत्पन्न हुए। जहाँ ३३ सागरोपम का आयुष्य था। वहाँ का आयुष्य पूर्ण कर बीसवें भव में शेर के रूप में जन्में। उस योनी में अनेक हिंसक कार्य किए और आयुष्य पूर्ण कर २१वें भव में चौथी नरक में पैदा हुए। २२वाँ भव पुनः मनुष्य का है, वो आगे कैसे होता है, कैसी साधना चलती है, आगे आने पर बताने का भाव है।

आज पर्युषण का चौथा दिवस वाणी संयम दिवस है। वाणी का संयम रखना चाहिए। आगे भी मौन रखें। दूसरा मौन है–अनावश्यक नहीं बोलना। अपेक्षा है तो बोलें, छोटा सा सूत्र है–अनावश्यक न बोलना बड़ा मौन है। वाणी संयम में चार बातें हैं–(१) मित्त भाषिता, (२) मिष्ट भाषिता, (३) रित भाषिता, सत्य-यथार्थ बोलना, (४) परिक्ष भाषित-सोचकर बोलना। वाणी संयम पर नव गीतिका–'संयम रखें मानव वाणी का सदा'। का सुमधुर संगान किया। ज्यादा बोलना अच्छा नहीं बात में गहराई हो। मौका देखकर कहाँ, कितना बोलें, ये अवश्य ध्यान दें। जितना अपेक्षित उपयोगी है, बोलना चाहिए।

वचन रतन मुख कोट है,
होठ कपाट बनाया।
समझ-समझ हरख काढ़िये,
मत परवश पड़ जाय।।

हम वाणी का विवेक रखें। गुस्सा काम का नहीं, शांति रखें। गृहस्थों के परिवार में गुस्से से समस्या पैदा हो सकती है, यह एक दृष्टांत से समझाया। प्रेम से समस्या का समाधान हो सकता है। वह भाषा गंदी है, जिसमें गुस्सा है। झूठ है। हमारी भाषा गंदी न बनें। जो भाषा मिष्ट है, शिष्ट है, वह भाषा विशिष्ट है। हमें ऐसा प्रयास करना चाहिए।

मन की गाँठों को खोलने का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

पूज्यप्रवर ने भगवान महावीर के भवों का वर्णन करते हुए उनकी तपस्या का विवरण भी बताया। ढाई वर्षों में सिर्फ ३४९ दिन ही आहार किया पर रोज-रोज नहीं। बाकी दिन तपस्या में निराहार रहे। बेले से लेकर छः मासी तप, भद्र प्रतिमा, महाभद्र प्रतिमा और सर्वोत्तम भद्र प्रतिमा का भी तप किया। तपस्या के साथ ध्यान साधना भी चलती थी। चंडकौशिक सर्प का उद्धार किया।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने फरमाया कि थोड़े के लिए बहुत को नहीं खोना चाहिए। हम आगमों से, पूर्ववर्ती आचार्यों के ग्रंथों का स्वाध्याय कर प्रेरणा लें। संभव हो तो आत्म निरीक्षण रोज रात सोते समय करें। क्या किया, क्या कर रहा, क्या शेष रहा। प्रातः चिंतन करें कि मुझे आज क्या करना है। भगवान महावीर की वाणी को जीवन में उतारें। पर्युषण ऊर्ध्वारोहण का निमित्त बन सकता है। साध्वीवर्या जी ने 'आत्मा की पोथी पढ़ने का, यह सुंदर अवसर आया है' का सुमधुर संगान किया।

द्वितीय चरण में पूज्यप्रवर ने फरमाया कि भगवान महावीर से हमारा संबंध है। जैन शासन में अतीत में अनेक-अनेक आचार्य हुए हैं। जैन संघ में अनेक संप्रदाय हैं। दिगंबर और श्वेतांबर। श्वेतांबर में एक है तेरापंथ धर्मसंघ, जिसके प्रवर्तक थे आचार्य भिक्षु। इसका इतिहास करीब २६१ वर्ष का है। वे तेरापंथ के प्रथम आचार्य थे। पूज्यप्रवर ने आचार्य भिक्षु व उत्तरवर्ती आचार्यों का संक्षेप में विवरण बताया। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी को हमने साक्षात देखा है। उनके उपपात में बैठने का अवसर मिला। निकट में बैठने का अवसर मिला। कितना कृपा भाव था। मुझे तो खुला आकाश दिया विकास करने के लिए। दर्सों आचार्यों को श्रद्धा भाव से नमन।

आज पूज्यप्रवर का लगभग १७७ मिनट का प्रवचन हुआ। मुख्य नियोजिका जी ने आचार्यश्री महाश्रमण जी के बारे में बताया। अनेक विषयों पर अनेक चारित्रात्माओं के प्रवचन हुए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सुश्रावकों कर लो सामायिक से धर्म की कमाई : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, १७ अगस्त, २०२०

पर्वाधिराज पर्युषण का तीसरा दिन। विभिन्न विषयों पर पूज्यप्रवर एवं चारित्रात्माओं के प्रवचन चल रहे हैं। आज का दिन है–सामायिक दिवस। भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा पर आगे विवेचन करते हुए तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि साधक मरिचि एक बार बीमार हो गया। उसने सोचा बिना शिष्य के सेवा कौन करे। एक शिष्य बना लूँ। पर कुछ समय बाद मरिचि स्वस्थ हो गया। सोचा मेरे शिष्य बनने से सामने वाले का क्या कल्याण होगा। भगवान के पास भेजूँ और वह दीक्षा ग्रहण कर आत्मकल्याण की ओर आगे बढ़े। आचार्यप्रवर ने भगवान महावीर के तीसरे से अठारहवें भव के बारे में विवेचन किया।

शुद्ध साधु की सेवा करना आध्यात्मिक धर्म होता है। सेवा के प्रति निष्ठा हो और तरीका जानता हो तो सेवा अच्छी हो सकती है। सेवा धर्म गहन है। ध्यान करना, ज्ञानी बनना अच्छी बात है, पर मौके पर शुद्ध साधु की सेवा करना, बीमार की सेवा करना उत्तम है। साथ में चित्त समाधि भी पहूँचाएँ। सेवा करने वाले को मेवा मिलता है। हमारे धर्मसंघ में साधु-साध्वियाँ सेवा केंद्रों में सेवा करते हैं। तीन साल की सेवा का कर्ज होता है। उसे यथावस्था जल्दी मुक्त हो जाएँ जिस धर्मसंघ में सेवा अच्छी होती है तो विकास का आयाम मिल सकता है।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि जीवन बीतता है और जीवन पूरा भी होता है। जीवन नश्वर है, अशाश्वत है। वह शरीर के आधार पर टिका हुआ है, इसलिए अशाश्वत है। देवता भी अमर नहीं होते हैं। लंबा आयुष्य होता है, पर समय आता है, आयुष्य पूरा होता ही है। देवता हो या मनुष्य, तिर्यंच हो या नारक एक समय आएगा, मरना ही होगा।

आदमी को जीवन के अंतिम पढ़ाव में धार्मिक साधना करनी चाहिए। बारह वर्षों की संलेखना की बात बताई गई है। गृहस्थ बुढ़ापे में धार्मिक जीवन जीएँ ताकि परिणाम शुद्ध कर सकें। अगली गति खराब न हो। जीवन जो मिला है वो तो बीत रहा है, आगे की सोचें। मोक्ष के लिए, आत्मकल्याण के लिए क्या किया? धार्मिक साधना करें। जो युवा है वे भले धार्मिक साधक न बन सकें पर आचरणों में धर्म रहे। ईमानदारी, नैतिकता, अहिंसा और संयम रहे तो पाप-कर्म से बचाव हो सकता है, प्रयास करें। समय निकल सकता है।

साधना को तपस्या को निदान करके सस्ते में नहीं बेचना चाहिए कि मैं राजा या चक्रवर्ती अगले भव में बन जाऊँ। पद में क्या पड़ा है। अपद बनें, सिद्ध बनें। साधु या साधक को निदान नहीं करना चाहिए।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि उत्पादन करने के साथ निष्पादन हो। पढ़ाने की, अच्छे संस्कार देने की व्यवस्था हो। साथ में शिक्षा-परीक्षा भी हो। नवदीक्षितों का निर्माण अच्छा हो। समाज में सभा-संस्थाओं में अच्छे श्रावक कार्यकर्ता हो। ज्ञानशाला भी निर्माण का उपक्रम है। उपासक श्रेणी के सदस्य है, कितना अच्छा निर्माण हुआ है और होता रहे। भले इस बार पर्युषण यात्रा नहीं हुई। जहाँ रहते हैं, वहाँ तथा अपने घर में धर्मोद्योत करते रहें। उपासक श्रेणी भी अच्छी श्रेणी है और विकास होना चाहिए।

आज सामायिक दिवस है। पूज्यप्रवर ने सामायिक दिवस पर नव स्वरचित गीत–'सुश्रावक कर लो सामायिक से धर्म कमाई।' का सुमधुर संगान किया। इस गीत में सामायिक के बारे में व तात्त्विक जानकारी दी गई है। सामायिक शुभ योग नहीं है। इसमें की जाने वाली शुभ क्रिया शुभ योग है। कल वाणी संयम दिवस है, मौन का अभ्यास करें। अच्छे ढंग से पर्युषण साधना चले। साधु-साध्वी, समण श्रेणी व श्रावक अच्छा काम करें।

भीतर में भी प्रभु का नाम...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

काल अनंत है। काल के खंड होते हैं। मनुष्य लोक का कालचक्र दो भागों में अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी के रूप में है। इनके छः-छः अर होते हैं। उत्सर्पिणी में अरों का आरोहण होता है। अवसर्पिणी में अवरोहण होता है। उत्सर्पिणी में मनुष्य का आयुष्य व लंबाई बढ़ती है। अवसर्पिणी में आयुष्य और लंबाई कम होती है। अवसर्पिणी का चतुर्थ काल दुषम सुषमा खत्म होने को था ७५ वर्ष साढ़े आठ महीने शेष थे, कब भगवान गर्भस्थ होते हैं। उस समय ग्रीष्म ऋतु का चौथा महीना चल रहा था। आषाढ़ शुक्ला षष्टमी को भगवान महावीर की आत्मा देवलोक से च्युत होकर जम्बूद्वीप के भारत वर्ष में दक्षिण ब्राह्मण कुंड सन्नीवेश में ऋषभदत्त ब्राह्मण को भार्या देवनंदा की कुक्षी में अवतरित होती है। अवस्थित होती है। भगवान की आत्मा जब च्युत हुई तब तीन ज्ञान मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान से संपन्न थी।

देवानंदा की कुक्षी में भगवान का जीव स्थित है, गर्भकाल चल रहा है। स्वर्ग में देवों ने सोचा हमारा कर्तव्य है कि भगवान महावीर की आत्मा को ब्राह्मणी की कुक्षी से क्षत्रियाणी की कुक्षी में स्थानांतरित करें। तीर्थंकर तो क्षत्रिय कुल में होते हैं। प्रथम देवलोक के इंद्र ने अपनी पैदल सेना के देव हरिणगमेषी को आदेश दिया कि भगवान महावीर के बिम्ब को हस्तांतरित करो। वर्षाकाल का समय आसोज कृष्णा त्रयोदशी को जब उस गर्भ ८२ रात्रियाँ बीत चुकी थीं, ८३वीं रात्रि चल रही थी, उस देव ने भगवान के गर्भ बिंब को देवानंद की कुक्षी से त्रिशला की कुक्षी में स्थापित किया और त्रिशला की कुक्षी में जो गर्भ था उसे देवानंदा की कुक्षि में स्थापित किया। गर्भकाल का पूरा समय ९ मास साढ़े सात रात्रियाँ था।

ग्रीष्म ऋतु का समय चैत्र शुक्ला त्रयोदशी हस्तोतर नक्षत्र और चंद्रमा का योग त्रिशला ने स्वस्थ अवस्था में स्वस्थ शिशु को जन्म दिया। देवी-देवताओं ने अमृत, गंध, चूर्ण, हिरण्य और रत्नों की वर्षा की। एक परम पुरुष का इस मनुष्य लोक में जन्म-समागमन हो गया। तीर्थंकरों के जन्म पर मनुष्य के अलावा देवताओं में भी उत्सव होता है। चारों प्रकार के देव-देवियों ने सूची क्रम और तीर्थंकर अभिषेक किया।

भगवान का जन्मोत्सव मनाने के लिए राजा सिद्धार्थ ने अपने सगे-संबंधियों व मित्रों को आमंत्रित किया। विपुल अशन, पान बनाया गया। भिखारी, तृपण को भोजन कराया गया। नवजात शिशु के नामकरण प्रसंग आया तो राजा सिद्धार्थ बोले–ये जब से त्रिशला की कुक्षि में आय है, हमारे कुल में वर्धमानता हुई है। इसलिए इसका नाम वर्धमान रखा जाए। पाँच धाय माताओं से शिशु का लालन-पालन हो रहा है। बड़े हो गए तो पढ़ाने के लिए कलाचार्य के पास भेजा गया। स्वर्ग में इंद्र ने सोचा भगवान को क्या पढ़ाया जाए वो तो तीन ज्ञान के धनी हैं। इंद्र ब्राह्मण का रूप बनाकर आया और गुरुजी से प्रश्न पूछे। गुरुजी उत्तर नहीं दे पाए तो वर्धमान से वे प्रश्न पूछे। वर्धमान ने उत्तर दे दिए, तो कलाचार्य ने सोचा–मैं इनको क्या पढ़ाऊँ और वर्धमान को घर भेज दिया।

वर्धमान बड़े हुए तो विवाह की बात चली। वर्धमान विवाह नहीं करना चाहते थे पर माता की इच्छा से वर्धमान का विवाह राजा समरवीर की पुत्री यशोदा से हो गया। उनका दाम्पत्य जीवन प्रारंभ हो गया। श्रमण भगवान महावीर का काश्यप गौत्र था। उनके तीन नाम वर्धमान, श्रमण और महावीर।

आज जप दिवस है। अध्यात्म की साधना में जप का भी महत्त्व है। नाम जप शब्द को मंत्र बनाकर एकाग्रता से अभ्यास करना। आत्मा को शुद्ध करना। पूज्यप्रवर ने जप दिवस पर स्वरचित गीत–'भीतर में प्रभु का नाम भी जपो' का सुमधुर संगान किया। बाहर भी जीना होता है। जीयो बाहर, रहो भीतर। बाहर में जीते हुए भी भीतर में कैसे रहे उसो एक उपाय है, जप करते रहो। पवित्र मंत्र नमस्कार महामंत्र का जप करना चाहिए। कल का ध्यान दिवस है। पर्युषण की आराधना अच्छी तरह चलती रहे।

मुख्य मुनिप्रवर ने फरमाया कि त्याग एक तरह का सुरक्षा कवच है। संसार के भोग इक्षु के समान है। संवर निर्जरा साथ हो।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई सार्वीगण	(75 लाख रुपये)
अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(31 लाख रुपये)
श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनूं-इस्सामपुर	(11 लाख रुपये)
श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(5 लाख रुपये)

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

पाणिग्रहण संस्कार

उधना।

चांदराज निवासी, उधना प्रवासी बाबूलाल कोठारी की सुपुत्री मोनिका का अर्पित कुमार सुपुत्र अरविंद कुमार बाफना निवासी नेवरिया, हाल-उधना के साथ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक अनिल चंडालिया एवं महावीर संचती ने मंगलमंत्रोच्चार से विवाह संस्कार करवाया। संस्कारकों ने सभी परिवारजनों का आभार ज्ञापन किया।

नामकरण संस्कार

पूर्वांचल।

गोगलाव नागौर निवासी, दमदम, पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी अरिहंत-रंजू बोथरा के प्रांगण में कन्या का जन्म हुआ। जिसका नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजय कुमार बरमेचा ने संपूर्ण विधि व मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

विजय कुमार बरमेचा एवं तेयुप के संगठन मंत्री विकास सिंघी ने उपस्थित सभी को आभार ज्ञापन किया। तेयुप द्वारा बोथरा परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

जयपुर।

सुमन देवी-बाबूलाल बैद के सुपौत्र एवं क्रांति-दर्शन बैद के सुपुत्र का जैन संस्कार विधि से नामकरण संस्कार उनके आवास पर संपन्न करवाया। जैन संस्कार विधि के संयोजक सुनील बोथरा ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन कर मंगलमय वातावरण में मंत्रोच्चार कर कार्य संपन्न करवाया।

तेयुप के अध्यक्ष श्रेयांस बैंगाणी एवं बनीपार्क क्षेत्रीय प्रभारी अरिहंत सेठिया सहित अन्य पारिवारिक जन कार्यक्रम में सम्मलित हुए।

जल मंदिर का उद्घाटन

नोखा।

ओसवाल मोक्ष धाम में जल मंदिर का उद्घाटन जैन संस्कार विधि से किया गया। तेयुप ट्रस्ट की प्रेरणा से मातुश्री स्व० कानी देवी सुराणा, पिताश्री स्व० लालचंद सुराणा एवं स्व० पुत्र पीयूष की पुण्य स्मृति में भैरूदान सुराणा द्वारा बनाए गए जल मंदिर का उद्घाटन तेरापंथ सभा, नोखा के अध्यक्ष हनुमानमल ललवाणी ने किया। नगरपालिका एवं सभा के उपाध्यक्ष निर्मल भूरा, मंत्री इंदरचंद बैद, ओसवाल श्री संघ पंचायत अध्यक्ष नथमल सुखलेचा एवं समाज के गणमान्य जन उपस्थित हुए।

जैन संस्कारक मनीष मालू एवं अभातेयुप सदस्य गोपाल लूणावत ने जैन संस्कार विधि से कार्यक्रम संपन्न करवाया। इन सभी का तेयुप द्वारा हार्दिक आभार व्यक्त किया।

सामूहिक वैवाहिक वर्षगाँठ

उधना।

सामूहिक वैवाहिक वर्षगाँठ का आयोजन जैन संस्कार विधि के द्वारा अभातेयुप द्वारा ऑन लाइन जूम एप वर्चुअल मीटिंग के माध्यम से आयोजित किया गया। इस आयोजन में ४ जोड़े संभागी बने। संस्कारक अनिल चंडालिया, मिश्रीमल नंगावत और विकास कोठारी ने विधिवत मंत्रोच्चार के द्वारा जैन संस्कार विधि संपादित की।

संस्कारक अनिल चंडालिया ने जैन संस्कार विधि की विशेषताएँ व उपयोगिता बताते हुए सभी जोड़ों को शुभकामनाएँ प्रेषित की। संस्कारक विकास कोठारी ने मंगलभावना यंत्र की स्थापना से उनके हर कार्य मंगल ही मंगल हों, ऐसी शुभकामनाएँ प्रेषित की। संस्कारक मिश्रीमल नंगावत ने उपस्थित जोड़ों को विधिवत संकल्प करवाए। संस्कारक अनिल चंडालिया ने सभी को त्याग-प्रत्याख्यान करवाया और संस्कार सह-प्रभारी अनिल सिंघवी ने जूम पर उपस्थित सभी महानुभावों का आभार ज्ञापन किया।

✦ सम्यक् पथ पर स्थित होने के लिए अध्यात्म विद्या का ज्ञान अपेक्षित है।
–आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के शपथ ग्रहण समारोह के विविध आयोजन

इंदौर

तेयुप की नवगठित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन में जूम एप पर संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। शपथ विधि से पूर्व उपस्थित कोर कमेटी सदस्यों ने पलासिया भवन में विराजित समणी विपुलप्रज्ञा जी एवं समणी आदर्शप्रज्ञा जी से मंगलपाठ व आशीर्वचन प्राप्त किया। सामूहिक मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। सदस्यों द्वारा सामूहिक रूप से विजय गीत का संगान किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप सदस्य एवं इंदौर परिषद शाखा प्रभारी पुनीत भंडारी द्वारा किया गया। निवर्तमान अध्यक्ष वरुण कोटड़िया ने आभार व्यक्त किया। नवमनोनीत अध्यक्ष प्रकाश बैद को निवर्तमान अध्यक्ष वरुण कोटड़िया ने शपथ ग्रहण करवाई गई।

अध्यक्ष प्रकाश बैद द्वारा अपनी कार्यकारिणी सदस्यों के नामों की घोषणा की गई एवं सदस्यों को शपथ प्रदान की गई। इसी क्रम में सभा अध्यक्ष, महिला मंडल अध्यक्षा, शाखा प्रभारी पुनीत भंडारी व अभातेयुप सदस्य तरीन मेहता द्वारा जूम पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष को शुभकामनाएँ प्रेषित की। विकास घोड़ावत को मंत्री पद पर नियुक्त किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप उपाध्यक्ष प्रतीक सामोता द्वारा किया गया। कोषाध्यक्ष हनुमान फलोदिया द्वारा युवा साथियों को सदस्यता नवीनीकरण करते हुए आह्वान किया एवं अंत में सभी का आभार व्यक्त किया।

उत्तर हावड़ा / टालीगंज

साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में तेयुप, उत्तर हावड़ा एवं तेयुप, टालीगंज का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। अभातेयुप के सहमंत्री प्रथम एवं कोलकाता क्षेत्र में प्रवासित अनंत वागरेचा ने शपथ ग्रहण समारोह के प्रारूप को संक्षिप्त में कराकर दोनों परिषदों के अध्यक्ष एवं प्रबंधन समिति को शपथ ग्रहण करवाया। शपथ ग्रहण समारोह में तेयुप, उत्तर हावड़ा के शाखा प्रभारी सुनील दुगड़, चातुर्मासिक स्थल पर सेवा दे रहे जेटीएन प्रतिनिधि वीरेंद्र बोहरा, मनोज कोचर, चंदन बैंगानी, प्रवीण बैंगाणी, अध्यक्ष संदीप कुमार डागा के नेतृत्व में तेयुप के पदाधिकारीगण, अध्यक्ष सुमित कोठारी के नेतृत्व में तेयुप, टालीगंज के पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

साध्वी स्वर्णरेखा जी एवं सहवर्तिनी साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। शपथ ग्रहण समारोह, उत्तर हावड़ा की ओर से अध्यक्ष संदीप कुमार डागा, उपाध्यक्ष-२ अरुण कुमार बोहरा, मंत्री प्रवीण कुमार सिंघी, सहमंत्री-१ निर्मल बोकाड़िया, सहमंत्री-२ विक्रम बैद, कोषाध्यक्ष नवीन कुमार वागरेचा, संगठन मंत्री जितेंद्र सिंघी, तेकिमं प्रभारी नमन बच्छावत, तेकिमं नमन जम्मड उपस्थित थे।

इचलकरंजी

तेयुप की युवा शक्ति इस कोरोना जैसी विपरीत परिस्थिति में भी चातुर्मास व विशेष रूप से आगामी पर्युषण काल में अपने सामाजिक दायित्वों को निभाने के साथ-साथ अधिकाधिक धर्म-आराधना का लक्ष्य रखे। गुरु इंगित की पालना में अपना सर्वस्व अर्पण करने का भाव रखें। यह उद्गार शासनश्री साध्वी विद्यावती जी-द्वितीय ने शपथ ग्रहण समारोह के पश्चात उपसिीत हुए तेयुप इचलकरंजी की युवा शक्ति को प्रेरणा देते हुए कहे। साध्वी प्रियंवदा जी ने भी युवकों को संबोधित किया।

इससे पूर्व तेयुप, इलकरंजी का शपथ विधि समारोह स्थानीय तेरापंथ भवन में संपन्न हुआ। सर्वप्रथम नवकार महामंत्र के उच्चारण के साथ इस समारोह का शुभारंभ हुआ। तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत का संगान किया। अभातेयुप सदस्य संजय वैद मेहता ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया एवं समस्त नूतन कार्यकारिणी के प्रति मंगलकामना प्रेषित करते हुए अभातेयुप के आयामों व गतिविधियों के बारे में बताया। निवर्तमान अध्यक्ष प्रवीण भंसाली ने वतमान अध्यक्ष मुकेश भंसाली को पद व गोपनीयता की शपथ ग्रहण करवाई।

अध्यक्ष मुकेश भंसाली ने नूतन कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण करवाई। तेयुप अध्यक्ष मुकेश भंसाली ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी युवा साथियों से इस कार्यकाल में तेयुप की गतिविधियों में सहयोग करने व श्रम नियोजित करने हेतु आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्र संतोष भंसाली ने किया।

मैसूर

तेयुप का शपथ ग्रहण समारोह मुनि अर्हत कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। सर्वप्रथम मंगलाचरण तेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल पितलिया की गीतिका द्वारा किया गया। उसके बाद मुनि जयदीप कुमार द्वारा गीतिका का संगान किया गया। तत्पश्चात निवर्तमान अध्यक्ष महावीर देरासरिया ने निष्ठा पत्र का वाचन किया और नव मनोनीत अध्यक्ष दिनेश दक को पद की गोपनीयता व आचार संहिता की शपथ दिलाई गई।

इस अवसर पर जूम के माध्यम से अभातेयुप अध्यक्ष संदीप कोठारी व महामंत्री मनीष दफ्तरी ने विशेष उपस्थित रहकर परिषद के प्रति अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की। इस अवसर पर नवरत्न बाई देरासरिया ने इस चातुर्मास का पहली बड़ी तपस्या मासखमण के प्रत्याख्यान करवाते हुए मुनि अर्हत् कुमार जी ने कहा कि आज एक साथ दो महान कार्य हुए एक अपने पद का दायित्व ग्रहण कर रहे हैं, दूसरे तपस्या के द्वारा अपने कर्मों की निर्जरा।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष शांतिलाल कटारिया, मंत्री अशोक दक, महिला मंडल अध्यक्षा सुधा नवलखा, मंत्री सीमा देरासरिया सहित अनेक महानुभाव उपस्थित रहकर नव अध्यक्ष को बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन गौरव मेहता और विजय पितलिया ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री विनोद मुणोत ने किया।

णमोकार का ध्यान करो तन्मय बनकर गुणगान करो : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, २१ अगस्त, २०२०

पर्युषण पर्वाधिराज का सातवाँ दिन–ध्यान दिवस। अनंत चक्षु की महायात्रा के यात्री, शांत, सौम्यमूर्ति आचार्यश्री महाश्रमण जी श्रमण भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का वाचन फरमा रहे हैं। कल पुज्यप्रवर ने वर्धमान के दाम्पत्य जीवन तक विवेचना फरमायी थी।

आचार्यप्रवर भगवान महावीर के माता-पिता के स्वर्गवास के पश्चात दीक्षा और साधु जीवन में उपसर्गों के विषय में फरमाया। भगवान महावीर के दीक्षा के समय लिए गए संकल्पों का वर्णन करते हुए कहा कि अब मेरा साधना काल है। शरीर की संभाल एक सीमा तक करनी है। उपसर्ग-कष्ट चाहे वे देवों, मनुष्यों या तिर्यंचों द्वारा उत्पन्न हो, मैं अव्यथित रहूँगा। आकुल-व्याकुल, दीन नहीं बनूँगा। मन, वचन, काय से सम्यक् रहूँगा। सहन करूँगा। दीक्षा लेने के बाद वहाँ से विहार कर दिया। पहला पड़ाव कर्मारगाँव (कामन छतरा) में मुहूर्त शेष रहते पहुँचे। साधना में लीन हो गए गाँव के बाहर अपनी साधना में स्थित है। पहले दिन से ही उपसर्गों की बरसात शुरू हो गई। कैसे उपसर्ग आते हैं, कैसे सहन करते हैं, आगे साधना का वर्णन है।

हमारा पर्युषण पर्व का काल का दिन शिखर चढ़ने का दिन है। सात दिन की पूर्व भूमिका तैयारी थी। मुख्य दिवस कल का है, कल संभव हो सके सभी को उपवास करना है। उपवास पौषध की प्रेरणा दी। आज ध्यान दिवस है। स्वरचित नव गीत 'श्री णमोकार का ध्यान करो, तन्मय बनकर गुणगान करो।' का सुमधुर संगान किया।

मुख्य नियोजिका जी ने ध्यान दिवस पर फरमाया कि कार्य करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है। चैतन्य केंद्र प्रेक्षा द्वारा छिपी शक्तियों को जागृत कर सकते हैं। कायोत्सर्ग का प्रयोग भी महत्त्वपूर्ण है।

मुनि दिनेश कुमार जी ने कल के प्रोग्राम की जानकारी दी। साथ में पौषध किस तरह करना उसकी भी जानकारी दी।

त्रिदिवसीय जैन संस्कार विधि प्रशिक्षण कार्यशाला

जयपुर।

अभातेयुप के निर्देशन में त्रिदिवसीय जैन संस्कार विधि प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन ऑन लाइन के माध्यम से हुआ। जिसमें डालमचंद नौलखा द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। सभी भाग लेने वाले संभागियों का एक्जाम हुआ। दीक्षांत समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी, महामंत्री मनीष दफ्तरी, पूर्व अध्यक्ष मर्यादा कुमार कोठारी, जैन संस्कार विधि प्रभारी श्रेयांस कोठारी, सहप्रभारी राकेश जैन और अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

जयपुर परिषद के अध्यक्ष श्रेयांस बैंगाणी ने बताया कि इस कार्यशाला में तेयुप, जयपुर जैन संस्कार विधि के संयोजक सुनील जैन को अभातेयुप द्वारा ह्वी श्रेणी संस्कारक का अलंकरण प्रदान किया गया।

✦ *अणुव्रत का संदेश है जीवन में नैतिकता, इंद्रिय संयम तथा इच्छाओं का परिसीमन हो।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण एवं सेवा कार्य के कार्यक्रम

स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोजण

भायंदर।

साध्वी सुदर्शनाश्री जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा पर्युषण महापर्व का प्रथम दिवस और साथ ही १५ अगस्त स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी सुदर्शनाश्री जी के मंगलपाठ से हुई। ध्वजारोहण सभा अध्यक्ष महेंद्र वागरेचा और तेयुप अध्यक्ष भूपेंद्र वागरेचा के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेयुप और महिला मंडल की उपस्थिति रही।

मिठाई एवं मास्क वितरण

टी-दासरहल्ली।

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में अभातेयुप के निर्देशित त्रिआयामी लक्ष्यों के अंतर्गत सेवा के क्षेत्र में गतिशील होते हुए युवक ने सफाई कर्मचारियों को मिठाई एंव मास्क का वितरण कर सेवा कार्य किया। क्षेत्र के वार्ड नंबर १५ एवं वार्ड नं० १३ के लगभग २०० सफाई कर्मचारियों को मास्क एवं मिठाई का वितरण किया एवं शक्ति चैरिटेबेल ट्रस्ट में रह रहे आँखों से न देखने वाले को भी मिठाई वितरण कर स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दी।

सेवा कार्य में तेयुप पूर्व अध्यक्ष कन्हैयालाल गांधी, निवर्तमान अध्यक्ष राकेश दक, अध्यक्ष मुकेश चावत, उपाध्यक्ष-प्रथम अनिल गादिया, उपाध्यक्ष द्वितीय मनोज मेहता, मंत्री दिलीप पोखरना, अन्य गणमान्यजन एवं कार्यकारिणी सदस्यगण भी उपस्थित रहे। सेवा कार्य में तेरापंथ सभा ट्रस्ट परिवार, महिला मंडल, कन्या मंडल, किशोर मंडल भी उपस्थित रहे।

ट्रेफिक पुलिस को सेफ्टी किट वितरण

टालीगंज।

तेयुप द्वारा स्वतंत्रता दिवस रीजेंट पार्क ट्रेफिक पुलिस गार्ड के साथ मनाया गया। इन-चार्ज अशीष कुमार राय ने परिषद अध्यक्ष के साथ झंडा फहराया एवं राष्ट्रगान का संगान किया। परिषद द्वारा सेफ्टी किट में सेनिटाइजर, मास्क, पॉकेट रेन कोर्ट आदि का वितरण पुलिस स्टेशन में किया गया। परिषद अध्यक्ष सुमित कोठारी ने सभी उपस्थित सदस्य एवं पुलिस कर्मचारियों का स्वागत किया।

अशीष कुमार राय ने परिषद के इस कार्य की सराहना की। सभी सदस्यों ने मिलकर पुलिस कर्मचारियों में सेफ्टी किट वितरित की। मंत्री अरिहंत घोड़ावत ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम को सुचारु करने में टालीगंज तेरापंथ महिला मंडल और परिषद के सहमंत्री आनंद हिरावत, विकास पारेख के साथ कई लोगों का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में कई गणमान्यजन उपस्थित थे। कार्यक्रम के आयोजन में कार्यसमिति सदस्य और संयोजक अशोक बरड़िया का प्रयास सराहनीय रहा।

ध्वजारोहण एवं निशुक्ल सुगर कैंप

कोयंबटूर।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर स्थानीय तेयुप द्वारा ध्वजारोहण का कार्यक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के प्रांगण में आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्थानीय सभा के मंत्री प्रेम सुराणा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष धनराज सेठिया, मंत्री प्रकाश बोथरा, तेयुप अध्यक्ष दीपक लुणिया, उपाध्यक्ष शैलेश गोलछा, मंत्री रोहित चोरड़िया, सहमंत्री विनय चोरड़िया, संगठन मंत्री प्रदीप नाहटा, एटीडीसी संयोजक निर्मल बेगवानी एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा निःशुल्क शुगर कैंप का आयोजन किया गया।

स्वतंत्रता दिवस पर एटीडीसी प्रचार–प्रसार

हुबली।

अभातेयुप की जन-कल्याण संस्था तेयुप द्वारा संचालित आचार्यश्री तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में स्थानीय तेयुप ने १५ अगस्त, स्वतंत्रता दिवस मनाया। इस आयोजन में डायग्नोस्टिक सेंटर के प्रचार-प्रसार हेतु शहर के विभिन्न क्षेत्रों में पोस्टर लगाए साथ ही ५० ऑटोरिक्शा पर पोस्टर लगाकर प्रचार-प्रसार किया। हुबली में देसाई क्रोस पर स्थित आचार्यश्री तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर पर आधुनिक उपकरणों द्वारा जन-कल्याण के लिए अनेकों प्रकार के ब्लड टेस्ट ५० प्रतिशत तक डिस्काउंट रेट में किए जाते हैं। इस आयोजन में सभा अध्यक्ष महेंद्र पालगोता, मंत्री केसरीचंद गोलछा, अभातेयुप परामर्शक मुकेश भटेवरा, तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विनोद वेदमूथा, अध्यक्ष विकास वेदमूथा, मंत्री अरविंद कवाड़, प्रायोजक परिवार से प्रकाश कवाड़ एवं तेयुप और किशोर मंडल से प्रतिनिधि उपस्थित थे।

स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण

बालोतरा।

स्वतंत्रता दिवस न्यू तेरापंथ भवन में मनाया गया। तेयुप मंत्री नवीन सालेचा ने बताया कि सर्वप्रथम ध्वजारोहण तेरापंथ सभा अध्यक्ष शांतिलाल डागा, महिला मंडल अध्यक्षा अयोध्या देवी ओस्तवाल और तेयुप अध्यक्ष अरविंद सालेचा द्वारा किया गया फिर राष्ट्रगान का संगान किया गया एवं ध्वज को सलामी दी गई। साध्वी प्रमोदश्री जी ने सहवर्ती साध्वियों के साथ सबको मगलपाठ सुनाया।

इस अवसर पर कोषाध्यक्ष भंवरलाल चोपड़ा, महिला मंडल मंत्री रानी बाफना, तेयुप परामर्शक दिलीप मेहता, राजेश बाफना, मुकेश सालेचा सहित कार्यसमिति सदस्य अरिहंत चोपड़ा, खुशाल ढेलड़िया, भरत गोलेछा, जितेंद्र जीरावला, जितेंद्र छाजेड़, किशोर मंडल संयोजक रणजीत ओस्तवाल, उप-संयोजक आदित्य भंसाली एवं कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

एटीडीसी में स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम

पूर्वांचल।

१५ अगस्त, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता द्वारा ध्वजारोहण का एक कार्यक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति रही तेरापंथी सभा ट्रस्ट के पुनः मनोनीत अध्यक्ष संजय सिंघी की। तेयुप अध्यक्ष आलोक बरमेचा एवं सभा अध्यक्ष संजय सिंघी ने झंडारोहण करवाया। कार्यक्रम का संचालन आईपीपी एवं एटीडीसी के संयोजक नरेंद्र छाजेड़ ने किया।

कार्यक्रम में परिषद के मंत्री लोकेश गोलछा, कोषाध्यक्ष अमित बैद, संगठन मंत्री विकास सिंघी, एटीडीसी सह-संयोजक रोहित धारेवा, सहित अनेक कार्यसमिति सदस्य व एटीडीसी के कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का लाइव प्रसारण फेसबुक पर भी किया गया।

पुलिस को सैनेटाइजर डिस्पेंसर भेंट

साउथ हावड़ा।

स्वतंत्रता दिवस की ७४वीं वर्षगाँठ पर तेयुप द्वारा सामाजिक सेवा कार्य हावड़ा सिटी पुलिस के साथ किया गया। जिसके अंतर्गत मास्क, सेनेटाइजर, डिस्पेंसर का वितरण हावड़ा पुलिस स्टेशन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सभी सदस्यों द्वारा सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ किया गया। पुलिस स्टेशन के अधिकारी सुदीप रॉय सहित हावड़ा सिटी पुलिस के सिविल वोलेंटियर्स भी उपस्थित थे।

परिषद अध्यक्ष पवन कुमार बैंगाणी ने हावड़ा सिटी पुलिस अधिकारी एवं उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया। परिषद के संस्थापक अध्यक्ष राजेश कुमार दुगड़, अभातेयुप जेटीएन सहसंपादक पंकज दुधोड़िया की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंत्री बिरेंद्र बोहरा ने किया। थाना के अधिकारी सुदीप रॉय ने परिषद के कार्यों की अनुमोदना की। सामाजिक सेवा के संयोजक कंवरलाल राखेचा ने पधारे सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

● तेयुप एवं किशोर मंडल द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, तेमम, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम ने भी सहभागिता दर्ज कराई। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक मंगलाचरण से हुआ। मुख्य अतिथि सभा के मुख्य न्यासी संजय नाहटा, अध्यक्ष सुशील गीडिया ने ध्वजारोहण किया। कार्यक्रम में समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन परिषद के मंत्री बिरेंद्र बोहरा ने किया। आभार ज्ञापन कार्यसमिति सदस्य अजित दुगड़ ने किया।

प्लाजमा दान करवाने पर राज्य सरकार द्वारा सम्मानित

गुवाहाटी।

प्लाज्मा दान के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने का कार्य तेयुप कर रही है। स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य पर असम सरकार के जजेज फील्ड में हुए कार्यक्रम में तेयुप, गुवाहाटी को प्लाज्मा दान के क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मान किया गया। जिसे अभातेयुप के नेत्रदान प्रभारी बजरंग सुराणा ने ग्रहण किया। साथ ही असम सरकार द्वारा तेयुप के २० प्लाज्मा दाताओं को भी सम्मानित किया गया।

✦ *विद्यार्थी ज्ञान के साथ सदाचार के संस्कारों को भी अर्जित करने का प्रयास करते रहें।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ मार्ग की संपूर्ण जानकारी हो तथा व्यक्ति सम्यक् दिशा में चले तो वह अपनी मंजिल को प्राप्त कर सकता है।
–आचार्यश्री महाश्रमण

विकास महोत्सव पर विशेष

जन जीवन निर्माता – आचार्यश्री तुलसी

❑ मुनि कमल कुमार ❑

भारत देश वीर और वीरांगनाओं की जन्मभूमि है। इस भूमि पर समय-समय पर अनेक वीरों ने जन्म लेकर देश का गौरव बढ़ाया है। उन गौरवशाली महापुरुषों में एक नाम आचार्यश्री तुलसी का भी है, जिन्होंने मात्र ११ वर्ष की अल्पायु में तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य श्री कालूगणी के करकमलों से दीक्षा लेकर स्व-कल्याण के साथ जन-जन का कल्याण किया। यह केवल स्तुत्य ही नहीं अनुकरणीय है।

मात्र २२ वर्ष की अवस्था में आप विशाल धर्मसंघ के आचार्य बने। यह केवल तेरापंथ और जैन धर्म के लिए ही नहीं सबके लिए आश्चर्यकारी था। परंतु आपने अपने निर्मल और उदात्त चिंतन से केवल तेरापंथ साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं का ही नहीं जन-जन का कल्याण कैसे हो, इसका चिंतन ही नहीं किया बल्कि पूरा प्रयास किया, जिसमें आपको पूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

साधु-साध्वियों का गहरा अध्ययन आपके कुशल पुरुषार्थ की देन है। आपने आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होते ही प्रथम कार्य यह किया जिससे आज तेरापंथ के साधु-साध्वियों, जैन-अजैन, मंदिर-मस्जिद, गुरुद्वारा आश्रम में ही नहीं, संसद भवन राष्ट्रपति भवन में भी पहुँचकर उन्हें संबोधित करते हैं। सबको युगानुकूल चिंतन प्रदान करते हैं। भारत के प्रथम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर आज तक के समस्त राजनेता भी आपश्री से या आपके उत्तराधिकारियों से उचित मार्गदर्शन प्राप्त करते रहते हैं। आपका चिंतन बड़ा ही व्यापक और अनाग्रही था, आप फरमाते कोई जैन बने या नहीं परंतु गुडमैन बने।

आपने जो नैतिकता का अभियान चलाया व अणुव्रत आंदोलन के नाम से प्रतिष्ठित हुआ। वह आंदोलन विद्यार्थी, अध्यापक, व्यापारी, कर्मचारी, श्रमिक, राजनेता, प्रत्याशी सबके लिए था। उनका व्यापक चिंतन था कि हर व्यक्ति हर वर्ग के लोग नैतिक प्रामाणिक स्वच्छ हो तभी विश्व शांति का सपना साकार हो सकता है। उनके उदात्त विचारों ने ही उन्हें युगप्रधान बनाया। उन्हें धर्मसंघ से युगप्रधान, गणाधिपति अणुव्रत अनुशास्ता जैसे संबोधन अलंकरण प्राप्त हुए। समाज और सरकार के द्वारा भारत ज्योति, वाकपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, हकीम खाँ, सूर खाँ सम्मान जैसे सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपके सुश्रम से बाल विवाह, मृत्यु भोज, घुँघट प्रथा जैसी अनेक कुरीतियों का समुचित उपचार हो पाया। आपने अपने रहते ही अपने सक्षम उत्तराधिकारी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर आचार्य पद का विसर्जन कर नया कीर्तिमान बना दिया जो आज के पद लिप्सी लोगों के लिए बोध पाठ बन गया।

तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य एक ही होते हैं। यह आचार्य भिक्षु की कृपा का फल है। और वर्तमान आचार्य का ही पट्ट महोत्सव मनाया जाता है। जब गुरुदेव तुलसी का पट्ट महोत्सव आया तब गुरुदेव ने उसे मनाने की मनाही कर दी एवं अपनी बात को स्पष्ट करते हुए यह फरमाया कि मैंने आचार्य पद का विसर्जन कर दिया है अब मेरा पट्ट महोत्सव नहीं मनाया जाए। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी वर्तमान आचार्य हैं इनका ही पट्ट महोत्सव मनाया जाए।

उस समय आचार्य महाप्रज्ञ जी ने निवेदन किया कि हम इस दिवस को विकास महोत्सव के रूप में प्रतिवर्ष मनाएँगे क्योंकि आपने तेरापंथ धर्मसंघ को नए-नए आयाम देकर इसका इह दृष्टि से विकास किया है, अतः हम भादवा सुदी नवमी को आपके पट्ट महोत्सव को सदा-सदा ही विकास महोत्सव के रूप में मनाएँगे। तब से अब तक अर्थात् आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के शासनकालमें भी इसे विधिवत मनाया गया। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी के शासनकाल में भी इसे मनाया जाता है, आगे भी मनाया जाएगा। आचार्यश्री तुलसी एक स्वस्थ कल्पनाकार ही नहीं प्रयोगधर्मा आचार्य थे। समय-समय पर अपनी गहरी साधना से एवं चिंतन की गहराई से प्राप्त तत्त्वों से जो मार्गदर्शन किया उसे युग नहीं शताब्दियों तक सदा-सदा स्मरण किया जाएगा। जीवन के अंतिम साँस तक सक्रिय और सक्षम रहकर सबका मार्गदर्शन करते रहे, ऐसे विकास पुरुष का विकास महोत्सव पर कोटि-कोटि अभिनंदन करते हैं।

पर्युषण महापर्व की साधना

हिसार।

तेरापंथ भवन में शासनश्री मुनि विजय कुमार जी के सान्निध्य में पर्युषण पर्व मनाया गया। कोरोना संकट व परमपूज्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार प्रवचन नहीं हुआ। कुछ लोग नियमित उपासना की दृष्टि से आते, उन्हें मुनिश्री जप योग, ध्यान योग का प्रयोग करवाते। तत्त्व चर्चा, कभी संस्मरण आदि के द्वारा मुनिश्री जी ने आगंतुक श्रावकों को पूर्ण संतोष दिया। रात्रि में भी अर्हत-वंदना के पश्चात कुछ समय यही क्रम चला। २२ अगस्त पर्वाधिराज संवत्सरी का आराधना का दिन था। श्रावकों के विशेष निवेदन पर कोरोना के नियमों का पालन करते हुए दो घंटे के लिए पूज्यप्रवर ने व्याख्यान की अनुमति फरमाई। लोगों ने खुशी प्रकट की किंतु संयोग ऐसा बना कि २१ अगस्त की शाम शनिवार और रविवार का लॉक डाउन घोषित होने से व्याख्यान निरस्त करना पड़ा। यह दूसरा संवाद पढ़कर काफी लोग अपने घर पर ही रहे। फिर भी ५० के लगभग श्रावक-श्राविका व्याख्यान सुनने भवन में पहुँच गए। शासनश्री ने गुरुवर के आदेशानुसार संवत्सरी का व्याख्यान लोगों को सुनाया। मुनिश्री ने आज के दिन की महत्ता पर प्रकाश डाला। सायंकालीन प्रतिक्रमण प्रतिदिन हुआ। पर्युषण में चलने वाला अखंड जाप इस बार घरों मे ही किया गया। पौषध भी धर्मस्थान से ज्यादा घरों में हुए।

२३ अगस्त को क्षमापना दिवस मनाया गया। मुनिश्री ने अति संक्षिप्त में आज के दिन की महत्ता बताते हुए कहा कि यह दिन मन से हल्के होने का है। कोई भी आदमी शरीर से मोटा होना पसंद नहीं करता, हल्का रहना चाहता है। ठीक इसी तरह मन को भी हल्का रखना जरूरी है। क्षमा भाव का विकास होने पर ही व्यक्ति मन से हल्का रह सकता है। यह स्वस्थ और सुखी जीवन जीने का अमोघ मंत्र है। व्यक्ति समूह का जीवन जीता है, किसी के साथ भी कटु व्यवहार हो सकता है। परम धार्मिक वह है जो सबके साथ पारस्परिक प्रेम और सौहार्द से रहे, राग-द्वेष की गाँठों से बचा रहे, अगर गाँठ लग भी जाए तो आज के दिन उसे अवश्य खोल दे। मुनिश्री ने अठाई तप करने वाले प्रमोद जैन व १३८ एकासन तप करने वाले श्यामसुंदर के प्रति अपनी अहोभावना प्रकट की। मुनिश्री की संक्षिप्त प्रस्तुति के बाद हैदराबाद में विराजमान पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमण जी, मुख्य मुनिजी, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी, साध्वी मुख्य नियोजिका जी, साध्वीवर्या जी तथा समस्त साधु-साध्वी समुदाय से सामूहिक खमतखामणा किया गया। हिसार में विराजित साधु-साध्वियों से भी श्रावक-श्राविकाओं ने खमतखामणा किया।

कार्यक्रम का प्रारंभ मैत्री गीत से हुआ। प्रातःकाल के इस अघोषित कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष संजय जैन, भूतपूर्व अध्यक्ष नत्थूराम, तेयुप अध्यक्ष अभिषेक सुराणा, महिला मंडल अध्यक्ष रवि जैन, किशोर मंडल संयोजक पुनीत जैन, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सत्यपाल ने क्षमा भाव की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संयोजन उपासक राजकुमार ने किया।

भिक्षु धम्म जागरणा

उत्तर हावड़ा।

तेयुप एवं तेरापंथ किशोर मंडल, उत्तर हावड़ा द्वारा भिक्षु स्वामी की मासिक तिथि तेरस पर भिक्षु धम्म जागरणा का अनवरत आयोजन ई-डिजिटल के माध्यम से गुगल मीट के जरिए अपने-अपने घरों में बैठे-बैठे सभी ने भजनों के संगान से आचार्य भिक्षु के जन्मोत्सव पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। सर्वप्रथम तेयुप के पूर्व मंत्री प्रवीण कुमार सिंघी ने नवकार महामंत्र के संगान के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ किया। तत्पश्चात मनोज बैद, भीकमचंद डोसी, केवल सिंघी, कोलकाता सभा के अध्यक्ष बुधमल लुनिया, बबिता बैद, सुनीता डागा, उत्तर हावड़ा सभा के पूर्व मंत्री विमल बैद सहित भजन संध्या से जुड़े सभी लोगों ने अपने-अपने घरों से भिक्षु स्वामी को श्रद्धा सुमन अर्पित कर अपने-अपने घर के माहौल को भक्तिमय बना दिया।

तेयुप के अध्यक्ष संदीप कुमार डागा के साथ अनेक धर्म प्रेमियों ने सहभागिता दर्ज कराई। इस कार्यक्रम के प्रायोजक जीवराज, जतनलाल, आनंद कुमार पारख हैं। अध्यक्ष संदीप कुमार डागा ने धर्म प्रेमियों, गायकों का आभार व्यक्त किया। तेयुप, उत्तर हावड़ा के पूर्व मंत्री प्रवीण कुमार सिंघी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

✦ अप्रमाद एक परम तत्त्व है। वह आध्यात्मिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से लाभदायी है। गलत कार्यों से बचना व जागरूक रहना अप्रमाद है।

✦ जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है।

– आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध कार्यक्रम

स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण कार्यक्रम

भीलवाड़ा।

स्वतंत्रता दिवस पर तेरापंथ महिला मंडल ने महिला मंडल द्वारा निर्मित आचार्यश्री महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्किल पर ध्वजारोहण कर राष्ट्रगान का संगान किया गया। ध्वजारोहण का कार्यक्रम सादगीपूर्वक संपन्न किया गया। जिसमें रेलवे स्टेशन के प्रधान अधिकारी राधेश्याम शर्मा एवं अन्य कर्मचारीगण और महिला मंडल अध्यक्षा विमला रांका, मंत्री रेणु चोरड़िया, कोषाध्यक्ष यशवंत सुतरिया, विजया सुराणा, मधु ओस्तवाल, शोभना सिरोहिया, जतन हिरण एवं डिंपल पीतलिया आदि बहनों की उपस्थिति रही।

चौबीसी प्रतियोगिता का आयोजन

चेन्नई।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में एक कार्यशाला का आयोजन जूम वेबिनार के माध्यम से दो चरणों में रखा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वरिष्ठ उपाध्यक्ष पुष्पा हिरण के नमस्कार महामंत्र से हुआ। तत्पश्चात प्रचार-प्रसार मंत्री लता पारख ने प्रेरणा गीत का संगान किया। अध्यक्षा शांति दुधोड़िया ने आगंतुकों का स्वागत किया। अभातेममं के राष्ट्रीय कार्यकारिणी माला कातरेला ने अपने जीवन के अनुभवों को साझा किया। प्रथम चरण में तेरापंथ धर्मसंघ के विभिन्न पहलुओं पर लगभग १५ बहनों ने गीतिका, स्वरचित कविता, मुक्ता, वक्तव्य के माध्यम से बहनों ने अपनी अभिव्यक्ति की सुंदर प्रस्तुतियाँ दी। संयोजिका कंचन भंडारी का विशेष सहयोग रहा।

द्वितीय चरण में भक्तामर और चौबीसी प्रतियोगिता रखी गई। सरोज चिप्पड़ ने सरल तरीके से ३ प्रश्नों के द्वारा भक्तामर के पद्यों से बहनों से प्रश्न पूछे जिसमें प्रथम सुमित्रा सावनसुखा, द्वितीय स्थान पर संयुक्त रूप से वसंता बाबेल एवं रिंकु चोरड़िया एवं तृतीय स्थान पर स्नेहा सेठिया रहे। प्रतियोगिता में ११ बहनों ने भाग लिया। चौबीसी प्रतियोगिता दीपाली सेठिया ने करवाई। चौबीसी में उच्चारण शुद्धिकरण, चौबीसी की राग एवं कंठस्थ के आधार पर राउंड करवाए, जिसमें प्रथम स्थान पर दमयंती बाफना एवं द्वितीय स्थान पर कल्याणी डूंगरवाल एवं तृतीय स्थान पर संयुक्त रूप में सुमित्रा सावनसुखा एवं सुभद्रा लुणावत रहे। प्रतियोगिता को सफल बनाने में संयोजिका रीमा सिंघवी का विशेष सहयोग रहा। सभी विजेताओं को महिला मंडल जूम वेबिनार के तकनीकी वसहयोग के लिए रमेश खटेड़ का सहयोग मिला। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री गुणवंती खटेड़ एवं संयुक्त सहयोगी कंचन भंडारी एवं रीमा सिंघवी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रचार-प्रसार मंत्री संगीता आच्छा ने किया।

कन्या मंडल को मिले पुरस्कार

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशन में अखिल भारतीय तेरापंथ कन्या मंडल के १६वीं वर्चुअल अधिवेशन जूम एप पर संपन्न हुआ। जिसमें बालोतरा कन्या मंडल ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। वर्ष भर में हुए कार्यों के मूल्यांकन में बालोतरा कन्या मंडल को दो पुरस्कार से सम्मानित किया। जिसमें अभातेकमं द्वारा स्टार परफोर्मेंस ऑफ द इयर में बालोतरा कन्या मंडल को Wow रैली और मासिक जाप इनमें स्टार पुरस्कार मिले।

तेममं बालोतरा की अध्यक्षा अयोध्या देवी ओस्तवाल व मंत्री रानी बाफना के नेतृत्व में कन्या मंडल निरंतर गति-प्रगति कर रहा है। इसमें कन्या मंडल प्रभारी इंदु भंसाली, कन्या मंडल संयोजिका विधि भंसाली, सह-संयोजिका रक्षा ओस्तवाल के प्रयास ने कन्या मंडल को नई ऊँचाई दी है। वर्षभर की गतिविधियों को निरंतर सुचारु रूप से गति प्रदान करने में सभी कन्याओं –प्रियंका, निकिता, मनीषा, तनीषा का विशेष सहयोग रहा।

स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण कार्यक्रम

बालोतरा।

स्वतंत्रता दिवस पर आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा सर्कल पर तेममं द्वारा ध्वजारोहण किया गया और न्यू तेरापंथ भवन में साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में ध्वजारोहण किया गया। जिसमें तेरापंथ सभा अध्यक्ष शांतिलाल डागा, तेयुप अध्यक्ष अरविंद सालेचा, मंत्री नवीन सालेचा, उनकी पूरी टीम उपस्थित रही और तेममं अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, मंत्री रानी बाफना, उपाध्यक्ष चंद्र बालाड़, उपाध्यक्ष उर्मिला सालेचा, प्रचार-प्रसार मंत्री पुष्पा सालेचा भी उपस्थित रहे।

भक्ति संध्या का कार्यक्रम

उधना।

तेरापंथ भवन में विराजित साध्वी सम्यक्प्रभा जी की प्रेरणा से 'आओ स्वामीजी' का आयोजन किया गया। आओ स्वामीजी के कार्यक्रम में मुख्य प्रस्तुति गायिका श्रेया रांका द्वारा भीलवाड़ा से फेसबुक के माध्यम से तेयुप के फेसबुक पर लाइव किया गया। लगभग २ घंटे लगातार गीतों का दौर चला। कार्यक्रम में अंत तक लगभग ७५ से अधिक एक्टिव दर्शकगण रहे एवं ३८०० से अधिक दर्शक इस कार्यक्रम को फेसबुक के माध्यम से देख चुके हैं।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष अरुण चंडालिया, मंत्री मनीष दक, भजन मंडली प्रभारी एवं कार्यक्रम के संयोजक कपिल कावड़िया के श्रम से कार्यक्रम सफल बना। कार्यक्रम को प्रचारित-प्रसारित करने में संगठन मंत्री उत्कर्ष खाब्या, प्रचार-प्रसार की संपूर्ण टीम का सहयोग मिला।

तेरापंथी सभा के साधारण सभा एवं शपथ ग्रहण समारोह के विविध आयोजन

साधारण सभा

मदुरै।

तेरापंथ सभा, मदुरै के चुनाव अधिकारी उपासक नेनमल कोठारी एवं जितेंद्र गोलछा ने जयंतीलाल जीरावला को अध्यक्ष घोषित किया। तेरापंथ सभा पूर्व अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी ने नवमनोनीत अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावाला को बधाई दी। तेरापंथ ट्रस्ट के ट्रस्टी विजयसिंह भटेरा आदि समाज के वरिष्ठ लोगों ने नव अध्यक्ष को बधाई दी। नव अध्यक्ष जयंतीलाल जीरावला ने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया।

शपथ ग्रहण समारोह

विजयनगर।

साध्वी मंगलप्रभा जी के सान्निध्य में विजय नगर तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजेश चावत एवं उनकी संपूर्ण कार्यकारिणी का शपथ समारोह आयोजित हुआ। तेरापंथ महासभा के सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। तेरापंथी सभा विजयनगर के निवर्तमान अध्यक्ष बंसीलाल पितलिया ने स्वागत भाषण के पश्चात नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजेश चावत को अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। नवमनोनीत अध्यक्ष ने अपनी टीम के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों के नाम की घोषणा करते हुए उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक मर्यादित, अनुशासित एवं एक गुरु के नेतृत्व में साधना करने वाला विशिष्ट धर्मसंघ है। साध्वी सुदर्शन प्रभा जी, साध्वी राजुल प्रभा जी, साध्वी चेतन्यप्रभा जी एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने गीत के माध्यम से अपने भावों की प्रस्तुति दी। नव मनोनीत अध्यक्ष राजेश चावत ने अपनी टीम की घोषणा की।

तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल ने अपनी शुभकामनाएँ सप्रेषित की। महासभा के सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा, अभातेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, महासभा के कार्यकारिणी सदस्य कैलाश बोराणा, विजयनगर तेयुप अध्यक्ष पवन मांडोत, महिला मंडल मंत्री मधु कटारिया ने नवमनोनीत अध्यक्ष एवं उनकी टीम के प्रति शुभकामनाएँ संप्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष राकेश दुधेड़िया ने किया। आभार कमल तातेड़ ने प्रेषित किया।

शपथ ग्रहण समारोह

साउथ हावड़ा।

तेरापंथी सभा का शपथ ग्रहण समारोह जूम एप के माध्यम से आयोजित हुआ। नवमनोनीत अध्यक्ष सुशील कमार गिड़िया ने साध्वी स्वर्णरेखा जी से मंगलपाठ श्रवण किया। तत्पश्चात नमस्कार महामंत्र के स्मरण के साथ शपथ समारोह प्रारंभ हुआ। तेरापंथी महासभा के मुख्य न्यासी भंवरलाल बैद ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। महासभा के अध्यक्ष सुरेश गोयल ने साउथ हावड़ा सभा के नवमनोनीत अध्यक्ष सुशील कुमार गिड़िया को तेरापंथ संविधान की शपथ दिलवाई।

महासभा के महामंत्री रमेश जैन सुतरिया ने सभी पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों को शपथ दिलवाई। महासभा के न्यासी सुशील पुगलिया, कोषाध्यक्ष मदन मरोठी, संगठन मंत्री प्रकाश डाकलिया, टीपीएफ के राष्ट्रीय महामंत्री सुशील जैन, आंचलिक प्रभारी तेजकरण बोथरा, सभा के प्रभारी शैलेंद्र बोरड़, महिला मंडल अध्यक्षा शीला नाहटा, तेयुप के अध्यक्ष पवन बैंगाणी, टीपीएफ के अध्यक्ष वीरेंद्र सेठिया, कोलकाता सभा के अध्यक्ष बुधमल लुनिया, पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंघी, साउथ कोलकाता के अध्यक्ष बाबूलाल बोथरा, उत्तर हावड़ा के अध्यक्ष राकेश संचेती, उत्तर मध्य कोलकाता के अध्यक्ष राजेंद्र संचेती, साउथ हावड़ा के निवर्तमान अध्यक्ष शिखरचंद लुणावत आदि सभी ने अपनी मंगलभावनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने किया।

✦ जीवन में सदुपदेश का थोड़ा-सा अंश भी उतरना शुरू हो गया तो जीवन में सत् परिवर्तन आ सकता है।
–आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

दिव्यांग आश्रम में राशन वितरण

राजाराजेश्वरी नगर।

तेयुप द्वारा शिव शक्ति होम्स, जिसमें २५ दिव्यांग बच्चों को जरूरी राशन आदि की सामग्री का वितरण किया गया। इस सेवा के कार्यक्रम के लिए हनुमानमल संजय बैद (नोखा) परिवार ने प्रायोजक रहे। प्रायोजक परिवार से संजय बैद ने कहा कि वर्तमान स्थिति को देखते हुए समाज में सेवा कार्य की अपेक्षा है, इसके लिए संपन्न परिवारों को आगे आना चाहिए। शिव शक्ति होम के प्रभारी डी० मनोरंजिताम ने धन्यवाद किया।

परिषद अध्यक्ष नरेश बांठिया ने प्रायोजक परिवार के प्रति साधुवाद एवं मंगलकामना संप्रेषित की। इस सेवा कार्य में अभातेयुप के युवावाहिनी के राष्ट्रीय संयोजक संजय बैद परिषद के सहमंत्री-प्रथम विकास छाजेड़, सहमंत्री-द्वितीय बरुण पटावरी, संगठन मंत्री बिकास छाजेड़, कोषाध्यक्ष पंकज बैद, कार्यकारिणी सदस्य गौतम नाहटा आदि उपस्थित थे।

सीमा सुरक्षा बल को कोरोना रक्षक किट भेंट

उत्तर हावड़ा।

तेयुप, उत्तर हावड़ा, पंख-सपनों की उड़ान, स्वर्णिम फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में कोरोना महामारी से बचने के लिए जरूरी सामग्री–सैनेटाइजर, हैंड ग्लब्स, मास्क, ताप मापने की मशीन, इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए राजस्थान का सुप्रसिद्ध काढ़ा इत्यादि की किट Border Security Force (BSF) के Sector Head Quarter, Kolkata में जाकर अफसरों से मिलकर उन्हें सुपुर्द किया गया।

तेयुप के अध्यक्ष संदीप कुमार डागा ने उपस्थित सभी कमांडर ऑफिसर्स का स्वागत एवं अभिनंदन करते हुए अभातेयुप द्वारा निर्धारित तीनों आयामों, सेवा, संस्कार और संगठन के बारे में अवगत कराया। वहाँ उपस्थित सीओ जसवीर सिंह ने तेयुप और सहयोगी संस्थाओं की प्रशंसा करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया।

तेयुप के अध्यक्ष संदीप कुमार डागा के साथ उपाध्यक्ष-२ अरुण कुमार बोहरा, सहमंत्री-२ विक्रम बैद, सेवा कार्य के संयोजक कीर्ति भंसाली, स्वर्णिम फाउंडेशन के किशन भोजक, अजीत वर्मा एवं राजीव मेहरा उपस्थित थे।

पुलिस चौकी में सेवा कार्य

उत्तर हावड़ा।

रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर तेयुप द्वारा गोलाबाड़ी थाना के पास कोरोना महामारी से बचाव के साधन मास्क, ग्लब्स, सैनेटाइजर आदि वितरित किए गए साथही साथ रक्षाबंधन के पावन पर्व पर राहगीरों को राखी बाँधी गई और चाकलेट बाँटी गई।

तेयुप, उत्तर हावड़ा की कार्यकारिणी समिति सदस्य रितेश छाजेड़ जन्म दिवस के अवसर पर सेवा कार्य का आयोजन किया गया। इस सेवा कार्य में गोलाबाड़ी पुलिस का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। गोलाबाड़ी पुलिस स्टेशन के ओसी विश्वजीत बनर्जी, गोलाबाड़ी ट्रैफिक गार्ड के आईसी स्वप्न कृष्ण हलदर, एस आई समरेश मित्रा सहित अनेक पुलिसकर्मी, तेयुप के अध्यक्ष संदीप कुमार डागा इस सेवा कार्य में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के प्रायोजक ललित कुमार, रितेश कुमार खटेड़ थे।

नि:शुल्क दवा वितरण

सेलम।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य चल रहा है। जिसमें जरूरतमंदों की सहायता की जाती है। इसी दौरान रिटायर अध्यापिका लिंडा (हॉली फलावर स्कूल) को जरूरत की दवाइयाँ दी गईं। गौरव बोहरा एवं अश्विन सेठिया इस कार्य के प्रभारी के रूप में नियुक्त किए गए।

जयाचार्य निर्वाण दिवस

स्वाध्यायी नर करता भव को पार है : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, १६ अगस्त, २०२०

भाद्रवा कृष्णा द्वादशी, तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य जयाचार्य की वार्षिक महाप्रयाण दिवस। पर्युषण का दूसरा दिवस–स्वाध्याय दिवस। भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का विवेचन करते हुए अहिंसा यात्रा के प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि साधु संस्था में ज्ञातिजन का आकर्षण होता है। ज्ञातिजन में ध्यान दें कि कोई दीक्षा ले सकता है क्या? गुरुकुलवासी एवं बहिर्विहारी साधु-साध्वियों को परामर्श है कि ज्ञातिजन का आध्यात्मिक विकास कैसे हो सकता है। कोई दीक्षा के लिए तैयार हो। किसी की आत्मा का कल्याण हो और संघ सेवा भी हो सकती है। इस बात पर ध्यान दें।

साधु-साध्वियाँ दशवैकालिक को याद कर पुनरावर्तन करते रहें भूल न जाएँ। आगम को मित्र बनाएँ तो एक छोटी सी संपदा हमारे पास रह सकती है। वह समय कृतार्थ होता है, जब आगम का अध्ययन होता है। शरीर में क्षुधा, भूख, प्यास, सर्दी-गर्मी के परिषह की स्थिति हो तो समता रखें। समता से सहा जाए तो महान फल का कारण बन सकता है। सहन करना धर्म है।

भगवान के साधुओं के मन, वचन और काय ये तीन दंड हैं, साधु इनको जीतने वाले हैं।

एक बार चक्रवर्ती भरत ने भगवान से पूछा, प्रश्न किया कि भगवान! आपका यह समवसरण है, इतने लोग बैठे हैं। इनमें से ऐसा कोई जीव है, क्या जो आगे तीर्थंकर बनेगा। भगवान बोले, भरत! इस समवसरण में तो नहीं है। इस समवसरण के बाहर तुम्हारा बेटा मरिचि बैठा है, वो इस अवसर्पिणी का अंतिम तीर्थंकर होगा। प्रथम वासुदेव बनेगा और चक्रवर्ती भी बनेगा। भरत ने बेटे के विकास की बात सुनी तो आत्मतोष हुआ। बाहर आया और मरिचि से बोला जो बाहर बैठा था कि भगवान ने घोषणा की है कि तुम अंतिम तीर्थंकर, मुकानगरी में चक्रवर्ती और प्रथम वासुदेव बनोगे। सुनकर मरिचि ने सोचा मुझे तीन-तीन महापद मिलेंगे। उसमें अहंकार का भाव आ गया और त्रिदंड उछालकर नाचने लगा। मैं पहला वासुदेव बनूँगा। मेरे पिता प्रथम चक्रवर्ती हैं और मेरे दादा प्रथम तीर्थंकर हैं। मेरा कुल कितना बड़ा है। मैं चक्रवर्ती और तीर्थंकर भी बनूँगा। आदमी को घमंड नहीं करना चाहिए। घमंड करने से पाप कर्म और नीच गौत्र कर्म का बंध हो सकता है। आदमी को पैसे, पद और पावर का कभी घमंड नहीं करना चाहिए।

भाद्रव कृष्णा द्वादशी हमारे चतुर्थ आचार्य जयाचार्य की वार्षिक महाप्रयाण तिथि है। उन्होंने जयपुर में अंतिम श्वास लाला जी की हवेली में लिया था और रामनिवास बाग में अंतिम संस्कार हुआ था। जिसे मैंने साधना का शक्तिपीठ नाम दिया है। वे स्थूल भाषा में आचार्य भिक्षु के अवतार थे। वे आचार्य भिक्षु के साहित्य के भाष्यकार थे। महान साहित्यकार भी थे। भगवती की जोड़ जो राजस्थानी भाषा का गीतमय विशाल ग्रंथ है कि रचना की थी। धर्मसंघ में नवीनता लाने का प्रयास किया था।

स्वाध्याय दिवस पर पूज्यप्रवर स्वरचित नवीन गीत 'ओ साधक स्वाध्यायी नर पाता भव पार है।' का सुमधुर संगान किया। साध्वीप्रमुखाश्री जी ने स्वाध्याय दिवस पर विशेष प्रेरणा दी कि जीवन में शिक्षा का महत्त्व है। शिक्षा दो प्रकार की होती है, लौकिक और लोकोत्तर। दोनों का अपना महत्त्व है। संसार में सबसे बड़ी कमी अज्ञान है, उसे दूर करने का प्रयास करें। अज्ञान से आग्रह बढ़ता है। स्वाध्याय के पाँच प्रकारों को विस्तार से समझाया। साध्वीवर्या जी ने जयाचार्य के जीवन के घटना प्रसंगों पर प्रकाश डाला।

जीवन में सादगी और विचारों में...

(पृष्ठ ६ का शेष)

जो हमारा हो विरोध, हम उसे समझें विनोद। छोटे-छोटे वाक्य बड़े प्रेरणादायी हैं। जीवन में सादगी और विचारों में उदारता रखो। 'निज पर शासन, फिर अनुशासन'। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने अहिंसा यात्रा की थी। गुजरात की हिंसा में मैत्री का झरना बहाने का प्रयास किया था। आदमी में अहिंसा, ईमानदारी, नशामुक्ति व पर्यावरण विशुद्धि रहे। किसी भी जाति-धर्म वाला अणुव्रती बन सकता है। नास्तिक भी अणुव्रती बन सकता है।

अणुव्रत की एक सामान्य आचार संहिता है। अलग-अलग कर्मों जैसे विद्यार्थी शिक्षक, व्यवसायी के अलग नियम हैं। अणुव्रत मानव के लिए कल्याणकारी बन सकता है। जीवन में प्रामाणिकता, ईमानदारी रखो। धोखाधड़ी न हो। ईमानदारी अपने आप में एक संपत्ति है। इसे सुरक्षित रखें। नशामुक्त रहें। नशा को उलटा कर दो शान (आत्मा की शान को) अच्छा कर सकती है। अहिंसा यात्रा में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बातें बताई जा रही हैं। आत्मा अच्छी बने। छोटे-छोटे संकल्पों को स्वीकार कर पालने का प्रयास करें। नियम के प्रति निष्ठा रहे। अणुव्रत कल्याणकारी बन सकता है। प्रतिक्रमण, तप, त्याग, स्वाध्याय सामायिक करें। संवत्सरी के दिन उपवास पौषध का लक्ष्य रखें।

साध्वीवर्या जी ने 'जो भीतर में ही रमण करें वह संतपुरुष कहलाता है' गीत का संगान किया।

जीवन में सादगी और विचारों में उदारता रखें : आचार्यश्री महाश्रमण

महाश्रमण वाटिका, हैदराबाद, १६ अगस्त, २०२०

महापर्व पर्युषण का पाँचवाँ दिवस-अणुव्रत चेतना दिवस। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भगवान महावीर की अध्यात्म यात्रा का विवेचन करते हुए आगे फरमाया कि आदमी जैसा कर्म करता है, उसके अनुसार उसे फल भी भोगना पड़ता है। जब आदमी को कर्म फल देते हैं, तो ज्ञाती लोग भी सहयोग नहीं देते। उसे स्वयं ही भोगना पड़ता है। भगवान महावीर के जीवन को देखें। उनकी आत्मा नरकगति, देवगति, पशु योनी में गई है, तो बार-बार मनुष्य भी बने हैं। सत्ताईस भवों का वर्णन है, इसका अर्थ यह नहीं कि उनकी आत्मा ने २७ भव ही किए। अनंत-अनंत भव किए हैं, पर वो सब बताना असंभव है। चयनित मुख्य-मुख्य भव है जिनकी भगवान से निकटता है या सम्यक्त्व प्राप्त किया है। इसलिए सम्यक्त्व प्राप्ति के बाद के २७ मुख्य भव बताए गए हैं।

आचार्यप्रवर ने आज के प्रवन में भगवान महावीर के २२वें, २६वें भव का सुंदर वर्णन किया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि राजा के तीन कर्तव्य होते हैं–सज्जनों का सम्मान करना, दुर्जन पर अनुशासन करना और प्रजा का भरण-पोषण करना। जो राजा प्रजा की सुरक्षा नहीं करता, भरण-पोषण नहीं करता वह बकरी के गले के रुदन की तरह कोई काम का नहीं होता है। आचार्यप्रवर ने

आगे फरमाते हुए कहा कि किसी को भी जबरदस्ती त्याग नहीं करवाना चाहिए।

आत्मा को सुधारना बड़ा काम होता है। अणुव्रत भी यही सिखाता है। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में कर्म का बड़ा महत्त्व है, सारा जीवन कर्म पर आधारित है। पुण्य के योग से अनुकूलता और पाप के योग से प्रतिकूलता प्राप्त हो सकती है। जीवन के एक-एक आयाम को कर्मों के आलोक में देख सकते हैं। भगवान महावीर ने नंदन के भव में राजपाट त्यागकर संयम धारण किया और एक लाख वर्ष का संयम पर्याय वाला। ग्यारह अंगों का अध्ययन किया, आगम का स्वाध्याय किया और कठोर तप भी किए। ११ लाख ६० हजार मासखमण की तपस्या में ३३३३ दिन तीन माह २७ दिन पारणे किए। तप और अर्हत् भक्ति के द्वारा नंदन मुनि के भव में तीर्थंकर नाम कर्म की प्रकृति का उपार्जन किया। नंदन मुनि के जीव ने समाधि मरण किया। आचार्यप्रवर ने फरमाते हुए कहा कि हर व्यक्ति के मन में यह धारणा होनी चाहिए कि शरीर मुझे छोड़े उससे पूर्व मैं शरीर को छोड़ दूँ। यह तीसरा मनोरथ साधु और श्रावक दोनों का होता है। नंदन मुनि ने मारणांतिक संलेखना से आयुष्य पूर्ण कर २६वें भव में देवगति में सबसे ऊँचे दसवें देवलोक प्राणत में उत्पन्न हुए। वहाँ से २० सागरोपम का आयुष्य पूरा किया।

आज पर्युषण महापर्व का पाँचवा दिन अणुव्रत चेतना दिवस है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत की बात प्रस्तुत की थी। अणुव्रत आंदोलन प्रारंभ करने के बाद सुदूर यात्राएँ की थी। गुरुदेव तुलसी ने मानव जाति को अवदान दिया। अच्छे मानव बने। जातिवाद की बात है। 'इंसान पहले इंसान, फिर हिंदु या मुसलमान'। 'सादा जीवन उच्च विचार, मानव जीवन का शृंगार।'

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शासनश्री साध्वी पानकुमारी जी 'प्रथम' का देवलोकगमन

बीकानेर।

तेरापंथ धर्मसंघ की वर्तमान में दीक्षा ज्येष्ठ शासनश्री साध्वीपानकुमारी जी 'प्रथम' श्रीडूंगरगढ़ का देवलोकगमन १० अगस्त, २०२० भाद्रपद कृष्ण ६, विक्रम संवत् २०७७ बीकानेर में हो गया। साध्वीश्री जी का जन्म कार्तिक शुक्ला तृतीया वि०सं० १९८० में डूंगरगढ़ के पुगलिया परिवार में हुआ। आपका ससुराल नाहर परिवार में था। आपकी दीक्षा तेरापंथ धर्मसंघ के नवम अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी द्वारा विक्रम संवत् १९९७ वैशाख कृष्णा दसमी को श्रीडूंगरगढ़ में हुई। विक्रम संवत् २००३ संगरूर-पंजाब में आपको अग्रगण्य बनाया गया। आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आपको 'शासनश्री' का अलंकरण प्रदान किया।

साध्वीश्री जी को परम पूज्य कालूगणीराज के मातुश्री साध्वी छोगांजी की दुर्लभ सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। आप साध्वी खूमांजी के साथ लगभग ४० वर्षों तक रहे। साध्वीश्री जी अंतिम समय अस्वस्थता के कारण बीकानेर में स्थिरवास में थीं। देवलोकगमन के पश्चात पूर्ण राजकीय नियमों का पालन करते हुए आपका अंतिम संस्कार बीकानेर में किया गया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

साभार : अमृतवाणी

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - विमल कटारिया द्वारा जे.के. ऑफसेट, 17, डी.एस.आई.डी.सी. रोहतक रोड, नांगलोई, दिल्ली से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित।